**रविवार 28 मार्च, 2021**

## *विषय* — वास्तविकता

***स्वर्ण पाठः*** **यशायाह** 64 : 4

"क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहने वालों के लिये काम करे।"

**उत्तरदायी अध्ययन**: **यशायाह 43 : 1, 2, 4-7**

1 हेइस्राएल तेरा रचने वाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने
तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर बुलाया है, तू मेरा ही है।
2 जब तू जल में हो कर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में हो कर चले, तब वे तुझे न डुबा
सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।
4 मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूं, इस कारण मैं तेरी सन्ती
मनुष्यों को और तेरे प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगों को दे दूंगा।
5 मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं; मैं तेरे वंश को पूर्व से ले आऊंगा, और पच्छिम से भी इकट्ठा करूंगा।
6 मैं उत्तर से कहूंगा, दे दे, और दक्खिन से कि रोक मत रख; मेरे पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी
की छोर से ले आओ;
7 हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिस को मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिस को मैं ने रचा और
बनाया है॥

## पाठ उपदेश

### *बाइबल*

### 1. निर्गमन 3 : 1, 7 (*से 1st* ,), 10

1 मूसा अपके ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियोंको चराता या; और वह उन्हें जंगल की
परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया।
7 फिर यहोवा ने कहा।
10 इसलिथे आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।

## 2. निर्गमन 4 : 1-7

1 तब मूसा ने उतर दिया, कि वे मेरी प्रतीति न करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन कहेंगे, कि यहोवा ने तुझ को
दर्शन नहीं दिया।
2 यहोवा ने उससे कहा, तेरे हाथ में वह क्या है? वह बोला, लाठी।
3 उसने कहा, उसे भूमि पर डाल दे; जब उसने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके
साम्हने से भागा।
4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ तब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह
उसके हाथ में फिर लाठी बन गई।
5 वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और
याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है।
6 फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा, कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप। सो उसने अपना हाथ छाती पर
रखकर ढांप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान
श्वेत हो गया है।
7 तब उसने कहा, अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप। और उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप
लिया; और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है, कि वह फिर सारी देह के समान हो
गया।

## 3. 2 राजा 6: 8-17

8 अराम का जाजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति कर के अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक
स्थान पर मेरी छावनी होगी।
9 तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से हो
कर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करने वाले हैं।
10 तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा कर के परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेज
कर, अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ।
11 इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुला कर उन से पूछा,
क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी
ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं,
12 एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन
की कोठरी में बोलता है।

13 राजा ने कहा, जा कर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेज कर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह समाचार मिला कि वह दोतान में है।
14 तब उसने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया।
15 भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?
16 उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।
17 तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।

## 4. मरकुस 8 : 1 (यीशु) (*से 1st,*)

1 यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन।

## 5. मरकुस 10 : 46-52

46 और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था।
47 वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर।
48 बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
49 तब यीशु ने ठहरकर कहा, उसे बुलाओ; और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा, ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है।
50 वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया।
51 इस पर यीशु ने उस से कहा; तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं।
52 यीशु ने उस से कहा; चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया॥

## 6. मत्ती 5 : 48

48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

## 7. 2 कुरिन्थियों 4 : 1, 3, 4, 6, 8, 9, 16-18

1 इसलिये जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते।
3 परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होने वालों ही के लिये पड़ा है।
4 और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।
6 इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥
8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते।
9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।
16 इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।
17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।
18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

## 8. इफिसियों 2 : 10 (हम हैं)

10 … हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥

*विज्ञान और स्वास्थ्य*

### 1. 472 : 24 (सब)-25

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है।

### 2. 478 : 24-27

शुरू से अंत तक, जो कुछ भी नश्वर है वह भौतिक मानवीय विश्वासों से बना है और कुछ और नहीं।
केवल वही वास्तविक है जो ईश्वर को दर्शाता है।

### 3. 14 : 25-30

भौतिक समझ के विश्वास और सपने से पूरी तरह से अलग, आध्यात्मिक समझ और पूरी पृथ्वी पर मनुष्य के प्रभुत्व की चेतना को प्रकट करके, जीवन दिव्य है। यह समझ त्रुटि निकालती है और बीमारों को चंगा करता है, और इसके साथ आप "धिकारी की नान" बोल सकते हैं।

### 4. 321 : 6-13 *अगला पृष्ठ*

हिब्रू लॉजिवर, भाषण की धीमी गति, लोगों को यह समझने में निराश करती है कि उसे क्या बताया जाना चाहिए। जब, अपने डंडे को गिराने के लिए प्रज्ञा ने नेतृत्व किया, तो उसने देखा कि यह नागिन बन गई है, इससे पहले मूसा भाग गया; लेकिन ज्ञान ने उसे वापस आकर सर्प को संभाल लिया, और तब मूसा का भय दूर हो गया। इस घटना में विज्ञान की वास्तविकता देखी गई थी। बात को केवल एक विश्वास के रूप में दिखाया गया था। ज्ञान की बोली के तहत नागिन, दुष्ट, दिव्य विज्ञान को समझने के माध्यम से नष्ट हो गया था, और यह सबूत एक कर्मचारी था जिस पर झुकना था। मूसा के भ्रम ने उसे खतरे में डालने की अपनी शक्ति खो दी, जब उसने पाया कि उसने जो स्पष्ट रूप से देखा था वह वास्तव में था लेकिन नश्वर विश्वास का एक चरण था।

यह वैज्ञानिक रूप से प्रदर्शित किया गया था कि कुष्ठ रोग नश्वर मन का निर्माण था और न ही पदार्थ की स्थिति, जब मूसा ने पहली बार उसकी छाती पर हाथ रखा और उसे भयानक बीमारी के साथ बर्फ की तरह सफ़ेद कर दिया, और वर्तमान में एक ही सरल प्रक्रिया द्वारा अपनी प्राकृतिक स्थिति के लिए अपने हाथ को बहाल किया। ईश्वरीय विज्ञान में इस प्रमाण से ईश्वर ने मूसा का भय कम कर दिया था, और भीतर की आवाज़ उसे ईश्वर की आवाज़ बन गई, जिसने कहा: "यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें, और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे।" और इसलिए यह आने वाली शताब्दियों में था, जब यीशु द्वारा विज्ञान का प्रदर्शन किया जा रहा था, जिसने अपने छात्रों को शराब में पानी बदलकर माइंड की शक्ति को दिखाया, और उन्हें सिखाया कि कैसे नागों को संभाला जाए, बीमारों को ठीक किया जाए और बुराइयों को बाहर निकाला जाए। मन की सर्वोच्चता के प्रमाण में।

जब एक सामग्री से आध्यात्मिक आधार पर जीवन और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण को बदलते हैं, हम जीवन की वास्तविकता प्राप्त करेंगे, आत्मा का नियंत्रण और हम अपने ईश्वरीय सिद्धांत में ईसाई धर्म या सत्य का अनुभव करेंगे। यह सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी प्राप्त होने से पहले चरमोत्कर्ष होना चाहिए और उसकी क्षमताओं का पता चला। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है - दिव्य विज्ञान की इस मान्यता के आने से पहले पूरा होने वाले अपार कार्य के मद्देनजर - अपने विचारों को दिव्य सिद्धांत की ओर मोड़ने के लिए, कि परिमित विश्वास अपनी त्रुटि को त्यागने के लिए तैयार हो सकता है।

### 5. 347 : 12-22

आलोचकों को विचार करना चाहिए कि तथाकथित नश्वर मनुष्य की वास्तविकता नहीं है। तब वे मसीह के आने के संकेत को निहारते। मसीह, भगवान के आध्यात्मिक या सच्चे विचार के रूप में, अब पुराने के रूप में आता है, गरीबों को सुसमाचार प्रचार करना, बीमारों को चंगा करना, और बुराइयों को बाहर निकालना। क्या यह त्रुटि है जो ईसाई धर्म के एक आवश्यक तत्व को बहाल कर रही है, - अर्थात्, एपोस्टोलिक, दिव्य उपचार? नहीं; यह ईसाई धर्म का विज्ञान है जो इसे बहाल कर रहा है, और अंधेरे में चमकने वाला प्रकाश है, जो कि अंधेरे को समझ में नहीं आता है।

### 6. 302 : 3-19

भौतिक शरीर और मन लौकिक हैं, लेकिन वास्तविक मनुष्य आध्यात्मिक और शाश्वत है। असली आदमी की पहचान नहीं खोई है, लेकिन इस स्पष्टीकरण के माध्यम से पाया जाता है।; इसके लिए अस्तित्व और सभी पहचान के प्रति सचेत अविभाजित है और अपरिवर्तित रहता है। जब भगवान सब और अनंत काल के हैं, तब यह असंभव है कि मनुष्य को वास्तविक रूप से खोना चाहिए। यह धारणा कि मन पदार्थ में है, और तथाकथित सुख और पीड़ा, जन्म, पाप, बीमारी, और पदार्थ की मृत्यु, वास्तविक हैं, एक नश्वर विश्वास है; और यह विश्वास वह सब है जो कभी खो जाएगा।

मनुष्य की हमारी परिभाषा को जारी रखते हुए, हमें याद रखना चाहिए कि सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी हमेशा के लिए अस्तित्व में है, और किसी भी जीवन, पदार्थ और बुद्धि के नश्वर भ्रम से परे और हमेशा मौजूद है। यह कथन तथ्य पर आधारित है, काल्पनिक नहीं।

### 7. 248 : 15-32

नश्वर मन से पहले मॉडल क्या है? क्या यह अपूर्णता, आनंद, दुःख, पाप, पीड़ा है? क्या तुमने नश्वर मॉडल को स्वीकार किया है? क्या आप इसे पुन: पेश कर रहे हैं? तब आप शातिर मूर्तिकारों और घृणित रूपों द्वारा अपने काम में प्रेतवाधित होते हैं। क्या आप अपूर्ण मॉडल के सभी मानव जाति से नहीं सुनते हैं? दुनिया इसे लगातार अपने टकटकी से पहले पकड़े हुए है। परिणाम यह है कि आप उन निचले पैटर्न का पालन करने के लिए उत्तरदायी हैं, अपने जीवनकाल को सीमित करते हैं, और अपने अनुभव को कोणीय रूपरेखा और मामले के मॉडल की विकृति में अपनाते हैं।

इसे ठीक करने के लिए, हमें पहले अपने टकटकी को सही दिशा में मोड़ना होगा, और फिर उस रास्ते पर चलना होगा। हमें विचार में आदर्श मॉडल बनाना चाहिए और उन्हें लगातार देखना चाहिए, या हम उन्हें भव्य और महान

जीवन में कभी नहीं उकेरेंगे। निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

**8. 353 : 16-22**

सभी वास्तविक शाश्वत हैं। पूर्णता वास्तविकता को रेखांकित करती है। पूर्णता के बिना, कुछ भी पूर्ण वास्तविक नहीं है। सभी चीजें गायब होती रहेंगी, जब तक पूर्णता प्रकट न हो जाए और वास्तविकता सामने न आ जाए। हमें सभी जगहों पर भूतों के बारे में विचार छोड़ना चाहिए। हमें अंधविश्वास के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करना चाहिए, लेकिन हमें इसमें सभी विश्वास पैदा करना चाहिए और बुद्धिमान होना चाहिए।

**9. 259 : 11-21**

वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

यदि मनुष्य एक बार परिपूर्ण था, लेकिन अब अपनी पूर्णता खो चुका है, तब मनुष्यों ने ईश्वर की प्रतिवर्त छवि को कभी नहीं माना। खोई हुई छवि कोई छवि नहीं है। सच्ची समानता दिव्य प्रतिबिंब में खो नहीं सकती। इसे समझते हुए, यीशु ने कहा: “इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है”॥

**10. 407 : 24-25 (*से* विचार)**

अपने आदर्शों को अपने विचारों में उपस्थित होने दें।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन

सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 6